सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• सुरेखा अग्रवाल 'स्वरा'

सृजक-सृजन-समीक्षा

सुरेखा अग्रवाल 'स्वरा'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत
"सृजक"
सुरेखा अग्रवाल 'स्वरा' का परिचय

नाम..सुरेखा अग्रवाल 'स्वरा'

पति का नाम...सुधीर अग्रवाल

शिक्षा...स्नातक

जन्मस्थान ..महाराष्ट्र

स्थाई निवास...लखनऊ.. यूपी

एक गृहणी...

उपलब्धियाँ...दो साझा संग्रह ..

रूह की आवाज़

कश्ती मे चाँद

अंतरा लोकजंग से रचनाएँ, लघु कथा और संस्मरण प्रकाशित

#अभिमत पटवारी मासिक पत्रिका मे कई आलेख ,संस्मरण कविताएँ प्रकशित।

#जनसत्ता दैनिक अख़बार मध्य प्रदेश स रचनाएँ

नवप्रदेश ,नवज्योति जोधपुर से रचनाएँ प्रकाशित ,विश्वगाथा के त्रैमासिक अंक से लेखनी की शुरआत..!

__आत्मकथ्य__ -

मैं #स्वरा सुरेखा अग्रवाल मूलतः मराठी भाषी, लेखन तो कक्षा बारहवीं से शुरू किया मराठी से कॉलेज की, वार्षिक पत्रिका में चार कविताएं

प्रकाशित हुई थी। शायद गंभीर नहीं थी लेखन के बाबत ,फिर डायरी लेखन तो था ही ...2013 आप कह सकते हैं मेरे लिए टर्निंग पॉइंट था।मेरी जिंदगी की दिशा ही बदल चुकी थी , गंभीर बीमारी से सब अस्त व्यस्त परिवार और मैं... करती क्या कलम थाम ली, श्रेय पतिदेव को देना चाहूंगी जिन्होंने मुझे एक बच्चे की तरह देख भाल की पहली रचना उन्हीं को सुनाई उनकी हौसलाफजाई और फिर लिखने का साहस बढ़ता गया मेरे आलोचक भी वही है और आगे बढ़ने की हिम्मत भी उन्हीं की देन, बीमारी कमजोर तो बनाती ही है पर कुछ सीखने को भी प्रेरित करती है ,लिखने का मकसद खुद को सुकूँ देना है अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से ही हो सकती या यूँ कहें शब्द सार हैं, मैं भावनाओं को बस उकेरती हूँ और रच देती भावनाओं को,शब्द से खेलना और उनको गढ़ना प्रिय शौक है मेरे जो आपके सामने है...! अंतरा लोकजंग मेरे लिए बेहद अनमोल हैं क्योंकि सही मायने में सागर रूपी प्यारे पाठक यहीं मिले अपार स्नेह भी और एक पहचान भी। शुक्रिया अंतरा-शब्द शक्ति शुक्रिया टीम , शुभकामनाएं।

सुरेखा 'स्वरा'

सृजक का सृजन

किस्मत

सुनो
तुम्हारे माथे पर अक्सर
उभरती हूँ मे अनचाहे ही..
उन लकीरों की तरह जिसे
किस्मत कहते है..!
उभरते हो फिर तुम मुझमें
एक धूमिल अक्स से और
कैद हो जाते हो जिस्त में
उन लहू में प्रवहित होती
धमनियों की तरह...!
रूह के तहखाने में
कैद हो धीरे धीरे
खोलते हो अन्तस्
की गिरह जिसमे
मर्यादा है एक सिमित
खिलखिलाहट की
उभरते हो तुम मेरे
चेहरों पर एक शर्म
का फाहा बनकर
उस बादल की तरह
जो रेंगता है मेरे अस्तित्व पर
और कर तर बतर
तुम्हारी हँसी में
बन बिज उतरते हो
मेरी मर्यादा मे एक अंकुरित
उनवान की तरह जो फैलता
है मुझमें उस महकती बेल की
तरह...

तस्वीर

सुनो ,जब मै नही रहूंगी
तब तुम मेरी उस श्वेत तस्वीर को सजा देना
अपने अनुरूप... !
अक्सर वह ताने जो कसते हो मुझपर बेवजह...
मेरा चुप रहना
मेरी वह गलतियाँ जो मै दोहराती थी
तुम्हारे लाख मना करने पर
चढ़ा दिया करना उसपर एक सदा बहार का फूल
जो रोज खिलता है हमारे आँगन में...!
वह दम्भ तुम्हारा और
हर बात पर नुक्स निकालने की आदत तुम्हारी..
जब मै ना रहूँ तो रोज सुबह चाय की चुस्की के साथ कहते रहना मुझे आदतन तुम..!
जानबूझकर कर लेना मिठी चाय और टोस्ट पर फैला देना ज़रा जरूरत से ज्यादा मक्खन और तब देना खुब ताना अपनेबढ़ते मोटापे का तुम मेरी उस श्वेत मौन तस्वीर को..!
और हाँ फिर भी ना समझ आएं तुम्हें तो एक काम करना मेरी कुछ आदतों को शामिल कर लेना अपनी आदतों मे तुम आसाँ हो जाएगा एक काम तुम्हारा...!
मै हमेशा रहूंगी तुम में
मै बनकर फिर आबाद रहेगा वह हर ताना तुम्हारा...!
आदतन रहेंगे हमेशा हम एक साथ ...!
मै, तुम और वह दिवार पर टँगी
मौन श्वेत निशब्द तस्वीर.. मेरी....!

पोटली

आज मिल ही गई
वह सुनहरी पोटली
जो माँ ने दी थी
और शायद माँ को नानी ने...!
हल्की सुनहरी
एक सौंधी महक लिए
चन्द चाँदी के सिक्के
और कुछ लाल पिली
बनारसी कतरनें...!
थोड़े ख़्वाब
थोड़ी ख्वाहिशें
थोडा नमक
और ढ़ेर सा सब्र
और थोड़ी सी कई
सारी दुआओं की
नजरबन्द कतरने...!

एक चिठ्ठी भी थी
हल्दी लगी
लिखा था जब लगे
कोई चोट तो पढ़ लेना
मरहम पर लेप का काम
करेगी
थी एक धानी चुनरी
सलमा सितारों से जुडी
जिक्र था ओढ़ लेना
इसे मुस्कुराकर जब
आएं कोई अड़चने...!
सफाई मे मिली मुझे यह
माँ की दी हुई ढ़ेर सारी
दुआओं की अजीब सी
अनमोल हिदायते...!

वेदना

सुनो
दर्द कराह रहा अन्तस् में
अंन्तस्त्राव की वेदना
और शिराओं के मध्य
एक मन्द गति देता वह
दर्द ना जाने कौनसा
निमित्त मात्र है...
जो बेचैन करता है
रूह को..!
धीमे धीमे वह छिन
लेता है नींद मेरी
उन उन्नीदि आँखों से
जो अनवरत् बह रही थी
उस दर्द के लहरों से..
कभी आक्रोशित होती
वह गहन पीड़ा
तो कभी तिमिर को
मात देती वह मौन
होकर गुजरती कदमों मे..!

बेइंतहा कसौटी पर खरे उतरने
के खातिर वह मध्यम गति
देता
ख़ारिज कर देता बनावटी
मुस्कान
को जो कोशिश करती हूँ मै
वेदना को मात देने के लिए
अपलक दर्द की वह
सूक्ष्म लकीर जो चल रही
है जिस्त के साथ
चन्द कड़वी गोलियों से
जूझती है साथ मेरे कभी
उस पहर कभी उस पहर
कराहता फिर दर्द यूँही
अक्सर अन्तस् मे एक
गतिहीन अंन्तस्त्राव की
मानिंद मुझमें बन
निमित्त मात्र...

एक थी मीरा

सुनो.
कहाँ लिखती हूँ मै
आता भी है क्या
लिखना मुझे??
सवाल खुद से
जवाब तुम से
इश्क ही तो गटका
था मैंने पहले
हाँ वही अब लेने
लगा है करवटे अब
अंदर
पल पल हर पल
हर्फ़ हर्फ़
पत्ता पत्ता
साँस दर साँस..
कभी तीखे शब्द
उबकाई करते है
और जीने के
लिए मुस्कुराती हूँ
और हजम हो जाती
है वह खट्टी डकारें
जो तुम दिन मे एक
बार धुआँ बन
फेंकते हो मुझपर..
इश्क कभी
जो गटका था मैंने
वह अब उस पुरानी
तह की हुई रेशमी
चादर सा कैद है एक
सूती कपडे मे बन्द
अलमारी मे..!
जो घुटता रहता है अंदर
ही अंदर..और दे जाता है
एक अंतहीन पैग़ाम इश्क
का जो गटका था
मैंने कई सदियाँ पहले...
हाँ बस अब वही लिखती
हूँ मै....

स्वंयसिद्धा

सुनो..
मत तलाशा करो मुझे
तुम अपनी हदों मे..!
मै ,..मै ही हूँ
रहने दो मुझे अपने वज़ूद में..!
आड़ी तिरछी
रंगहीन फिर
भी कई अनकहे
रंगों से सरोबार
तर मत करो अपने रंगों में..!
यह भी
सुनो..
मत तलाश करो मुझे
तुम अपनी हदों में..!

नहीं मेरा कोई स्वतंत्र आसमाँ
और न ही पृथक ज़मी मेरी
मन की स्वछंदता को रहने दो
मेरे भीतर कैद
सुनो ...
मत करो कैद
मुझे अपनी जंजीरों में...!
अस्तित्व और अस्मिता को
मर्यादा का नाम देकर
करते आए हो खुद ही मुझपर
प्रहार..
सुनो ...
अब उन ज़ख्मो को मत कैद
करो
उस दंभ के मलहम में...!

शातिर

शातिर होते हैं
बड़े ही यह
यादो के घरौंदे...!
प्रवाहित होते हैं
उन ज़ख्मो की तरह
शिराओं में जो न
चाहते हुए भी
उत्तर आती है
ज़ेहनी अक्स में...!
काबिज़ हो जाती हैं
हर साँस में और
कर लेती है निर्णय
एक ही क्षण में...!
बना देती है गुलाम
फिर होने लगती है
अजीब सी अनुभूति
दिमाग में,
जिस्म में,
स्पर्श में,
आँखों में
संवेदनाओं में,
और मौन स्पंदन
सी हलचल...!
हाँ यह यादें बहुत
शातिर होती है
जो थम थम कर
चलती है और पहुँचा देती हैं
शुन्य से वक्त के दरख्ते
अंधेरो क़े गर्त भरी
तिमिर सी सन्नाटे
वाली अँधेरी शिराओं में...
फिर क्या न कोई आस
और ना ही प्यास...
बस एक गूँजता ,
चीख़ता यादों
का घरौंदा...!

सृजन की समीक्षा

1.

शुभ प्रभात अंतरा शब्द शक्ति परिवार, बहुत बहुत **बधाई** और शुभकामनाएं प्रिय सुरेखा अग्रवाल"स्वरा" जी, आज केंद्रीय रचनाकार दिवस पर, सप्ताह के कवि के रूप में प्रस्तुत होने पर बहुत बहुत स्वागत है आपका, इतने समय से आपकी रचनाओं को पढ़कर प्रभावित हो रही थी, आज थोड़ा अधिक जानने को मिला। बहुत ही उम्दा भाव और शैली का समावेश है आपका आपकी रचनाओं में।

पहली रचना बेहद खूबसूरती से प्रियतम के लिए सुंदरतम अभिव्यक्ति की है, दूसरी रचना **तस्वीर**, ग़ज़ब की संवेदनाओं को प्रकट करती है यह रचना, वाह वाह वाह, लाजवाब, तीसरी रचना सुनहरी पोटली, मां के द्वारा दी गई हिदायतें, जो जिंदगी की परेशानियों में मलहम का काम करेगी, बहुत सुंदर रचना, चौथी रचना **वेदना**, ग़ज़ब का चित्र उकेरा है इस रचना ने कि नयन भीग गए, वाह वाह बहुत ही मार्मिक, पांचवीं रचना **एक थी मीरा**, एक और दर्द से भरी हुई अभिव्यक्ति, छठी रचना, **स्वयं सिद्धा**, बेहतरीन अभिव्यक्ति , सातवीं रचना यादों का घरौंदा, बेहतरीन अभिव्यक्ति , नि:शब्द कर दिया। आपके अच्छे स्वास्थ्य और उज्जवल भविष्य की कामना करती हूं। मंगलकामनाएं,..

पिंकी परुथी "अनामिका"

2.

सुरेखा अग्रवाल ‘ स्वरा ‘ जो को अंतरा के मंच पर केंद्रीय रचनाकार के रूप में देख कर प्रसन्नता हो रही है।

सहजता लिए हुए आत्मकथ्य प्रभावित करता है। मराठी भाषी होते हुए हिंदी में लिखना आपको महत्वपूर्ण बनाता है। आपकी बीमारी से अस्त-व्यस्त हुए जीवन और मन को थामने का काम किया आपकी लेखनी और पति के प्रोत्साहन ने। जिसे ये मीलो तो सच मानिए... जीवन सँवर उठता

है, सुवासित हो जाता है। **कभी-कभी अचानक आई विपत्तियाँ भी वरदान बन जाती हैं और सृजन को मार्ग मिल जाता है। इस रास्ते पर चलती रहिए सुर अपने सृजन को नए- नए आयाम देती रहिए।**

किस्मत...में प्रेम भाव की सुंदर अभिव्यक्ति है तो तस्वीर.... बिछड़ने के बाद अपने साथी से एकाकार होने की कोशिश की सहज अभिव्यक्ति है। पोटली..... बहुत ही प्यारी रचना है।माँ की पोटलियाँ बेटियों के लिए सदा ही आकर्षण का विषय रहती हैं और उनमें रखी वस्तुओं से वह कितनी सहजता और सरलता से अपने तार जोड़ती जाती हैं.... यह बहुत ही सुंदर ढंग से अभिव्यक्त हुआ है।

दर्द.... जिसे अपने अंदर ही छिपाए रखने को बनावटी मुस्कान ओढ़नी पड़ती है... का सशक्त चित्रण है। एक थी मीरा और स्वयं सिद्ध.... अपने शुरुआती प्रेम को पाने और अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाए रखने के संघर्ष को चित्रित करती है तो दूसरी ओर शातिर यादों के घरौंदे हैं जो न चाहते हुए भी दिल में उतरते जाते हैं।

सभी रचनाएँ सुंदर हैं। बाद कहीं-कहीं छिन (छीन), उन्निदि (उनींदी), बिज (बीज), सिमित (सीमित) शब्दों का अशुद्ध प्रयोग रचनाओं के प्रवाह को अवरुद्ध करता है। मराठी भाषी होने के कारण ऐसा हो सकता है, पर इस ओर ध्यान देना होगा।

सृजन जारी रखें।

शुभकामनाएँ।

डा॰ भारती वर्मा बौड़ाई

3.

सुरेखा अग्रवाल "स्वरा" जी को आज पटल पर सप्ताह की कवयित्री के रुप में देखकर अच्छा लगा, पटल पर पढ़ता रहा हूँ उन्हें, हार्दिक **बधाई** आज की उत्सव मूर्ति होने के लिए,..

रचनाएं शिल्प ,भाव और कथ्य के स्तर पर प्रभावित करती हैं।
मग़र मात्राओं की उलट पलट संज्ञान लेने योग्य है ।
मैं,

बीज,

तस्वीर श्वेत श्याम हो तो ज्यादा बेहतर
मात्र सफेदी कैसे दिखेगी

उत्तर/उतर

और भी देखेंगी तो त्रुटियाँ सहज ही मिल जाएँगी ।
कविताएं अंग्रेजी के मोनो लॉग सी हैं,जैसा ऊपर आ भाई सत्यप्रसन्न जी ने कहा ।
मग़र अपनी बात संप्रेषित करने में समर्थ हैं ।

किस्मत:- खूबसूरत सृजन है ,
लकीरों का अनचाहे उभर आना क़िस्मत नही मग़र ।
ये तो दैवीय सम्पदा है । नायक हर आहट में समाहित है जैसे ।
वआआह् वआआह्
मात्रिक त्रुटियाँ पढ़ने का मज़ा किरकिरा कर देती हैं मग़र ।

स्वयम् सिद्धा :-स्त्री अस्मिता का खूबसूरत दस्तावेज़ है ।
कोई क्यूँ किसी की काराओं में क़ैद हो।
वेदना :-अपनी ही वेदनाओं का अक़्स है ।
मन की हों या देह की , खूबसूरती से उकेरा है ।

पोटली :-सनातन उपहारों की सतत परम्परा का चित्र है ।
कितने लोग याद रख पाते हैं,...सहेज पाते हैं नानी से माँ और स्वयं तक आई धरोहर ।।
एक थी मीरा :-खूबसूरत रचना है , मग़र मीरा समर्पण की काव्य यात्रा है।
लेखिका इश्क़ की बात करती हैं ।

गटका शब्द का स्थानापन्न ले आयें तो बेहद खूबसूरत बात हो ।

शातिर:-

स्मृतियों की काराएं शातिर तो होंगीं ही ,

अन्यथा दबे पाँव आने में हर कोई माहिर नही होता ।

सरल,सहज अभिव्यक्ति रचनाओं को बोझिल होने से बचाती है ।

ये बड़ी उपलब्धि है । ढेर शुभकामनाएं।

और स्वरा जी ज़िंदगी का मूल मन्त्र है एकला चलो रे ।

कारवाँ तो चल पड़ने से ही बनते हैं न? ठहरा हो तो पानी भी ख़राब हो जाता है ।। **मंगल कामनाएँ,...जय हो, विजय हो,...**

ब्रजेश शर्मा विफल, झाँसी

4.

'स्वरा' जी केंद्रीय रचनाकारा के रूप में आपका हार्दिक स्वागत है। **एक योग्य और असरदार सृजन की समीक्षा में कुछ कहना मेरे लिये भी सौभाग्य का विषय है। ज़िन्दगी नदी की तरह विभिन्न धाराओं में बहने का नाम है जिसमें स्वास्थ और आर्थिक निर्भरता मुख्य है** । इनमें से एक भी धारा का बहाव बाधित होता है तो बड़ा कष्टकारी होता है लेकिन यहीं से निकलकर कोई नई धारा का उद्‌गम होता है जो आपका मनोबल बढ़ाता है और एक अलग मुक़ाम भी देता है । आपने भी जीवन के ऐसे ही दौर में कलम को अपनी ताकत बनाया और यह ताक़त बख़ूबी अपना असर पैदा कर रही है । आपकी अतुकांत कविताएँ जीवन की उन्मुक्त अभिव्यक्ति का असरदार माध्यम रहीं हैं। भावनाओं को व्यक्त करने का आपका यह अंदाज़ मेरा पसन्दीदा है ।

किस्मत,...इश्क़ या स्नेह जब रूहानी हो जाता है तो जीवनसाथी के हर भाव स्वयं में उतरते महसूस होते हैं , उसकी हँसी में हम खुश, उसके ग़म में ग़मगीन हो जाते हैं । रूहानी मुहब्बत की खूबसूरत अभिव्यक्ति।

तस्वीर,.. सिरहन पैदा करती कविता, भावनाओं की अभिव्यक्ति का चरम।

उत्कृष्ट अतुकांत । इसे आपकी प्रतिनिधि रचना कहूंगा । श्रेष्ठ उन्मुक्त या अतुकांत कविता वही है जिसमें तुकबन्दी न होने पर भी एहसास लयबद्ध होकर बहते हों । अप्रतिम सृजन ।

पोटली,.. रचना अपने आप मे संस्कारों की पोटली की तरह । कुछ चीजें पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं कहने को जिनकी कीमत यूँ तो कुछ नहीं लेकिन दुआओं, परवाह और परम्परा की महक लिये होती है। उत्तम रचना ।

वेदना,.. मार्मिक रचना, कभी कभी शरीर की वेदना इतनी असहनीय हो जाती है कि वह आत्मा की पीड़ा बन जाती है । शायद सहन करने वाला ही इतने मार्मिक भाव एवं शब्द रचना को दे सकता है । आह करने को मजबूर करती कविता ।

एक थी मीरा,.. रचना के अनुरूप सटीक विषय । जीवन में कुछ फैसले मीरा के ज़हर की तरह होते हैं जो जान तो नहीं लेते लेकिन ताउम्र उस ज़हर का एहसास ज़िंदा रहता है । बढ़िया सृजन ।

स्वयंसिद्धा,.. स्त्री को अस्तित्व और अस्मिता के मर्यादा के नाम पर बांध कर रखे जाने का विरोध करती प्रभावी रचना ।

यादों का घरौंदा,.. और उनका घरौंदे से निकलकर मनमस्तिष्क को शून्य से किसी घटना के कलरव तक पहुँचाने का प्रभावी अंदाज़..अप्रतिम कल्पनाशक्ति। मनोभावों, घटनाओं, एहसासों को देखने और अपनी कल्पनाशक्ति से अद्भुत उदाहरणों के साथ अपनी बात रखने में आपकी कुशलता का कोई सानी नहीं है । उन्मुक्त रचनाओं में आप श्रेष्ठतम हैं । आपकी अभिव्यक्तियों में वही हैं जो आप महसूस करती हैं कुल मिलाकर विशुद्ध रचनाएँ । ईश्वर से आपके स्वस्थ एवं प्रसन्न जीवन की मंगलकामना के साथ पुनः **बधाई** ।

हेमंत बोर्डिया

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com